Sangeet Manthan: Article 1 of N: Dashara - October 24, 2012

By Dr. Sudha Patwardhan

Send comments and questions to: reflections@vishnudigambarvidyalaya.com

समस्त पाठक एवं दर्शकगण,

सस्नेह अभिवादन |

'संगीत मंथन' में आप सभी का सहर्ष स्वागत है | संगीत से यहाँ विशेष रूप से शास्त्रीय संगीत अभिप्रेत है | पाठकों से अनुरोध है कि आप अपनी प्रतिक्रियाएँ अवश्य भेजें एवं "संगीत मंथन" शीर्षक को सार्थकता प्रदान करें |

प्रतिक्रियाएँ कृपया यहाँ भेजें ः

reflections@vishnudigambarvidyalaya.com

हमारे शास्त्रीय संगीत मे दो धाराएँ हैं --- उत्तर हिंदुस्तानी संगीत एवं कर्नाटक या दक्षिण हिंदुस्तानी संगीत | यहाँ उत्तर हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के विषय में विचार करेंगे | यदि आप यह सोच रहे हैं कि केवल शास्त्रीय संगीत ही क्यों, उपशास्त्रीय संगीत क्यों नहीं और आजकल जो टी. वी. चैनल्स पर बच्चें प्रस्तुत करते हैं उस संगीत के बारे में क्यों नहीं |

आप की सोच दुरूस्त है, लेकिन कुछ याद कर देखिये कि उन सभी कार्यक्रमों में --- जैसे कि सारेगमप, लिटल् चैम्पस्, इंडियन आयडल् और सुरक्षेत्र और ऐसे ही अन्य कार्यक्रमों में--- परीक्षक लोग यही कहते हैं कि बच्चों को शास्त्रीय संगीत का अध्ययन करना चाहिए | अब यहाँ हम देखेंगे कि कैसा है शास्त्रीय संगीत, क्या हैं उसकी विशेषताएँ और क्यों उसकी महानता का लोहा सभी लोग मानते हैं चाहे वे संगीत के जानकार हों या संगीत के बारे में विशेष कुछ न जाननेवाले आम लोगबाग हों |

हमारे उत्तर हिंदुस्तानी या फिर कर्नाटक संगीत में भी गायन - वादन - नर्तन तीनों शामिल रहते हैं | यहाँ अधिकतर गायन का एवं विशेष प्रसंग के चलते वादन का विचार होगा | वैसे ये तीनों ही एक दूसरे से संबंधित हैं, इस तत्त्व को सिध्द करनेवाली एक रोचक कथा प्रस्तुत है | प्रचीन ग्रंथों में यह कथा " वज्र मार्कण्डेय संवाद " के रूप में वर्णित है | वज्र नामक एक शिष्य ने अपने गुरू मार्कण्डेय से पूछा कि मैं मूर्तिकला सीखना चाहता हूँ , मुझे मार्गदर्शन कीजिए | गुरू मार्कण्डेय बोले इसके लिये तुम्हे नृत्यकला सीखनी होगी | जब वज्रने उनकी आज्ञाका पालन करते हुए नृत्यकला में प्रवीणता प्राप्त की और पूछा कि क्या अब मैं मूर्तिकला सीख सकता हूँ , तो गुरूने उसे गायन सीखने को कहा और क्रमशः उसे गायन, वादन, चित्र आदि सभी कलाओं का अध्ययन कराया | तभी वह मूर्तिकला में प्रवीण बना | उसी प्रकार यदि बच्चे सारेगमप, लिटल् चॅम्पस् आदि के लिये मूलतः शास्त्रीय संगीत सीखें तो अधिक उन्नती कर पाएँगे | अन्यथा उन विशिष्ट गानों में कुछ हरकतें , तरकीबें गाने के अतिरिक्त उन्हें कुछ अधिक नहीं आता है | जैसे जैसे आयु बढती है , सुननेवालों की अपेक्षा भी बढती है | ऐसे समयपर यदि वे अभिजात शास्त्रीय संगीत का अध्ययन आरंभ करें तो गीतों को अधिक अच्छे ढंग से पेश करना संभव होगा | नई - नई हरकतें सुरों के लगाव, बोलों (शब्दों) को सुंदर शैली में प्रस्तुत करना अर्थात् गायन में विकास संभव होगा श्रोताओं को उनकी पेशकश से आनंद की अनुभूति होगी |

शास्त्रीय संगीत का क्षेत्र अत्यंत विस्तृत है, वास्तव में उसकी कोई सीमा भी नही है | सुर यद्यपि सात ही हैं, किंतु उन सात सुरों द्वारा ही अनंत, अथाह नादसमुद्र का निर्माण हुआ है | शास्त्रीय संगीत की कई बंदिशों में 'नादसागर अपरंपार', 'राग सागर अपार, कोई न पायो पार' इस प्रकार की भावना अभिव्यक्त हुई है | वैसे संगीत से गायन, वादन, नर्तन तीनों का बोध होता है, किंतु प्राचीन काल से गायन को प्रधान माना गया है | उसके कुछ कारण हैं — प्रमुख कारम यह है कि गायन के लिए किसी अन्य अवलंब या सहारे की आवश्यकता नहीं होती — मात्र कंठ से निकली आवाज ही पर्याप्त है | दूसरा कारण यह माना गया है कि गायन करते समय कंठ से जो स्वर प्रकट होता है वह अपने अगले तथा पिछले स्वरों के संदर्भ सहित प्रकट होता है, इस कारण वह अधिक सशक्त, समर्थ होता है |

समय के चलते वाद्यों का प्रचलन बढा है तथा विदेशों में जहाँ आम तौर पर हमारी भाषा समझ में नहीं आती, वहाँ सितार, सरोद जैसे वाद्य लोकप्रिय हो रहे हैं — उनके साथ की जानेवाली तबले की संगति भी विदेशों में पसंद की जाती है | वैज्ञानिक विकास के कारण रेडियो, दूरदर्शन, इंटरनेट आदि का प्रभाव बढ चला है और सी. डी., डी.वी.डी. के सर्वत्र प्रसार से हमारे कंठ संगीत, वाद्य संगीत को काफी सराहा जा राहा है | प्रसिध्द एवं उदीयमान दोनों प्रकार के कलाकार भारत में तथा विदेशों में प्रस्तुति देते रहते हैं | संगीत समारोहों का आयोजन और उनमें शास्त्रीय गायन—वादन—नृत्य की प्रस्तुतियाँ आजकल आम बात हो गई है |

शास्त्रीय संगीत — विशेषकर कंठ संगीत में ख्याल गायन का महत्व अत्यधिक है | धृपद गायन अधिक प्राचीन है, तथा अभी भी उसकी प्रस्तुतियाँ होती हैं, किंतु आजकल ख्याल गायन अधिक लोकप्रिय हो गया है | ख्याल की अपनी विशेषताएँ हैं, उसमें विस्तार की अत्यधिक क्षमता है | किसी राग में पचास मिनट तक एक ख्याल की प्रस्तुति हो तो लोग बडे प्रेम से सुनते हैं | बडा ख्याल, छोटा ख्याल दोनों के अपने अलग रंग हैं, दोनों की पेशकश अच्छी लगती है | बडा ख्याल विलंबित लय में गाया जाता है, छोटा ख्याल कुछ कम विलंबित या मध्य लय में गाया जाता है | गायक अपनी प्रस्तुति में बडे—छोटे ख्याल, तरानें आदि गाते हैं | पश्चात ठुमरी, दादरा आदि उपशास्त्रीय विधाएँ भी पेश करते हैं | टप्पा जैसी कठिन गायकी वाली विधाएँ (forms) भी कुछ कलाकार पेश करते हैं | गायन को बहुविध शैली में प्रस्तुत करते समय भजन, भक्ति गीत की भी पेशकारी होती है |

इन सभी गीत विधाओं का अपना महत्व होता है, किंतु शास्त्रीय संगीत की महफिल में सर्वोपरि ख्याल गायन ही होता है | ठुमरी — दादरा, भजन — टप्पा आदि महफिल के अलंकरण या पूरक गीत विधाएँ होती हैं | मुख्य रूप से प्रस्तुती में ख्याल से रंगत होती है | महफिल में प्रभुत्व स्थापित करने के लिए गायक, गायिकाओं को ख्याल का प्रकटीकरण पूरी सामर्थ्य एवं विस्तार से करने की क्षमता अनिवार्य होती है | महफिलें अधिकतर शाम को आयोजित की जाती है, किंतु पर्व — त्यौहार, छुट्टियों के दिनों में सवेरे की महफिलें भी होती हैं | ऐसे अवसरों पर श्रोताओं को प्रातःकालीन रागों की प्रस्तुति सुनने को मिलती है |

Sangeet Manthan: 1 of N

By Dr. Sudha Patwardhan

Dear Readers,Greetings from Vishnu Digambar Mahavidyalaya.

Welcome to Sangeet Manthan! Through these columns I would share my thoughts about Indian Music in general and about Indian Classical Music in specific. I will heartily welcome the reflections of the readers, which would do justice to the title of the columns Sangeet Manthan (Churning the music). The reflections may be sent to:

reflections@vishnudigambarvidyalaya.com

Although Indian Culture considers that Music includes - Vocal Music, Instrumental Music and Dance, through this column I would mainly discuss the Vocal Music with some reference to Instrumental Music at times. But as we are on this all-encompassing concept of Music, I would like to share with you a very interesting story from Indian mythology. It is known as Vajra-Markandeya Sanvad.
The story goes like this:

Vajra was a devoted disciple of Markandeya. One day Vajra told his Guru “I want to learn sculpting. Will you please guide me?” Markandeya said: “Sure I will. But for that you will have to learn Dance.” Vajra mastered the art of Dance and went back to his Guru. Markandeya said: “That’s good. But if you really want to be a good musician, you will have to learn Vocal Music, Instrumental Music and Drawing-painting etc. too!” Vajra obediently went through the process of learning and mastering all those arts. And only then could he become a great sculptor.

Indian classical music has essentially two streams: Hindustani (the North Indian) and Karnatak (the South Indian). This column however would be mainly discussing the Hindustani Classical Music. One might ask “Why only classical music? Why not the light music - which is so very popular these days - especially through the music reality shows like Indian Idol, Sa Re Ga Ma and Little champs?” Well, have you noticed that almost every judge of these reality shows keeps on repeating one thing: “Singers must be adept at Classical Music; they must learn and practice classical music regularly even if their dream is to become playback singers.”

Let us see why these judges say so? Why is it that even the renowned light music singers give such an importance to learning and practicing Classical Music? Taking a leaf from the story of Vajra, if the children learn classical music, their understanding and performance of the light music for reality shows like Indian Idol, Sa Re Ga Ma would rise to a different level. In the absence of training in classical music, children’s expertise remains restricted to some specific modulations, in the given song. They can’t reach beyond that. As they grow in age, the expectations of the audience also grow and if the

children are trained in classical music they can live up to those expectations. They can improvise better with ‘harkat’, diverse ‘lagav’ etc. All the ornamentations in music can strengthen their performance and can touch the heart of the listeners.

Indian classical music is an ocean! Sky is the limit for mastering it. There are only seven notes, but the ocean of sounds created by them is unending, beyond comprehension. Probably that is the reason why many compositions in Indian classical music, the expressions like ‘Sonorous Ocean’, ‘Raga is an ocean whose shore no one can reach’, are often used.

There are reasons why Vocal Music is considered at the top in hierarchy of ‘Sangeet - which comprises of Vocal music, Instrumental music and Dance.’ The principle reason is that Vocal music does not need a crutch of external elements; it depends solely on human voice. Another reason is that it is proved that the sound of any one note coming out of a singer’s throat is naturally preceded and succeeded by separate independent notes. That is why the human voice is the richest in terms of music.

In the present days, instrumental music has no doubt gained popularity. Especially in foreign countries - where language in vocal music is a major barrier in appreciation - instruments like Sitar and Sarod have taken sizable mind-share of listeners. Add to it the tabla accompaniment luring the listeners with diverse patterns and allegro musical expressions. Due to the technological developments like radio, television and internet, and availability of CDs and DVDs, the music is getting popular around the world. The performances of established and upcoming artists, around the world are certainly doing great service to the cause of Indian classical music. It is good that the number of music conferences with classical music and Dance is increasing and it would go a long way in keeping the tradition of Indian classical music alive and kicking.